

खजुराहो मंदिर संपूर्ण काव्य व्यक्त करते हैं, जिसमें मूर्तियों में गहरे दार्शनिक अर्थ समाहित हैं



गोआ। हमारे देश के समृद्ध प्राचीन दर्शन के बारे में युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए हमने विशेष रूप से यह फिल्म बनाई है : खजुराओ की निर्देशक जोड़ी – आनंद और मुक्ति

खजुराहो मंदिर के खंडहर हमें क्या बताते हैं ?

खजुराहो परिसर में मौजूद 25 मंदिरों के अवशेष हजारों वर्ष पुराने हैं। मंदिर हमें प्राचीन भारत के बारे में उस युग के किसी भी अन्य खंडहरों की तुलना में कहीं अधिक गहरी बातें बताते हैं। लेकिन यह सब उत्तर भारत में सदियों पहले बने ऐसे अद्भुत निर्माणों का अवशेष है।

ये खंडहर उस समय के व्यापार, संस्कृति और सामाजिक जीवन के बारे में जानकारी देते हैं। एक कला के रूप में मंदिर की दीवारों पर मूर्तियों में एक पूरा काव्य अंकित किया गया था। ये शानदार मूर्तियां जो हमें हमारे प्राचीन भारतीय दर्शन के बारे में बताती हैं और सीखने के लिए एक खुली किताब हैं।

निर्देशक जोड़ी डॉ. दीपिका कोठारी और रामजी ओम की 60 मिनट की हिंदी डॉक्यूमेंट्री खजुराहो आनंद और मुक्ति, खजुराहो के 25 मंदिरों के खंडहरों का एक दस्तावेज है, जो हजारों वर्ष पुराने हैं। उन्होंने आज 53वें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफआई) में पीआईबी द्वारा आयोजित आईएफएफआई टेबल वार्ता सत्रों में से एक सत्र को संबोधित किया।

फिल्म निर्माताओं को मंदिर में क्या मिला ?

उनका उद्देश्य दर्शकों को यह दिखाना था कि खजुराहो के मंदिरों में क्या उपलब्ध है।

रामजी ओम ने कहा कि उन्हें वैदिक देवताओं की अभिव्यक्तियाँ मिलीं जो सभी 33 करोड़ हिंदू भगवान मंदिर की दीवारों पर खुदी हुई मूर्तियों में मौजूद हैं। उन्होंने कहा, “यह भारतीय कला का एक विश्वकोश है।”

इस वृत्तचित्र में खजुराहो मंदिर परिसर में वैकुण्ठ विष्णु मंदिर का पता लगाया गया है। रामजी ओम ने बताया कि कश्मीर और उसके आसपास के क्षेत्रों में वैकुण्ठ परम्परा अधिक प्रचलित थी। वैकुण्ठ सिद्धांत से संबंधित विभिन्न दार्शनिक विचारों को मंदिर की दीवारों पर अंकित पाया गया है।

फिल्म निर्माता रामजी ओम ने बताया कि मूर्तियां कृष्ण मिश्रा के संस्कृत नाटक ‘प्रबोधचंद्रदाय’ से प्रेरित हैं। इतना ही नहीं, बल्कि मंदिर की दीवारों पर सांख्य दर्शन प्रकट होता पाया गया है। उन्होंने कहा कि बंकिम चंद्र चटर्जी ने लिखा था कि ‘तांत्रिक झंडा नहीं, बल्कि सांख्य का ध्वज खजुराहो के मंदिरों के ऊपर ऊंचा फहराता है। खजुराहो का लक्ष्मण मंदिर, जिसे वैकुण्ठ विष्णु का निवास माना जाता है, फिल्म

में अपने सर्वोच्च उत्कृष्ट कला रूपों में इन पहलुओं को उजागर करता है।

डॉ. दीपिका कोठारी ने कहा, “खजुराहो के मंदिर कामुक मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं। लेकिन कामुक नक्काशी के पीछे दार्शनिक रहस्य छिपे हुए हैं। “उन्होंने कहा, “यह केवल 10 प्रतिशत है जो खुदा हुआ है और एक गहरा दर्शन बताता है।”

इस वृत्तचित्र में खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर में योग और सांख्य के रहस्यों का अनावरण किया गया है। डॉ. देवांगना देसाई ने वृत्तचित्र के माध्यम से समझाया कि सभी कामुक और गैर-कामुक कल्पना वैदिक और पौराणिक हिंदू संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

इस फिल्म का निर्माण भारतीय सभ्यता की 24 कड़ी की श्रृंखला के अंतर्गत किया गया है जिसे हाल ही में जारी किया गया है। डॉ. कोठारी ने यह भी कहा कि वर्तमान पीढ़ी हमारे प्राचीन मंदिरों के बारे में बहुत अनपढ़ हो गई है। इसलिए, उन्होंने विशेष रूप से हमारे देश के समृद्ध प्राचीन दर्शन के बारे में युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए यह फिल्म बनाई है जो मंदिर के खंडहरों में दिखाई देती है।